

# INHALTSVERZEICHNIS

|   |    |
|---|----|
| <b>VORWORT</b> .....  | 11 |
| <b>EINLEITUNG</b> .....   | 13 |
| <b>THEORETISCHER TEIL</b>   |    |
| <b>1 Kognitive Linguistik – wissenschaftlicher Kontext</b> .....  | 17 |
| 1.1 Modularismus vs. Holismus .....   | 19 |
| 1.2 Gestalttheorie .....  | 20 |
| 1.3 Kategorisierung, Konzeptualisierung und Prototypentheorie .....   | 21 |
| <b>2 Kognitive Metapherntheorie</b> .....   | 27 |
| 2.1 Die „klassische“ Metapherntheorie .....   | 27 |
| 2.2 Die kognitive Metapherntheorie und ihre Vorläufer .....   | 29 |
| 2.3 Hauptthesen der kognitiven Metapherntheorie .....   | 30 |
| 2.3.1 Ubiquitätsthese.....  | 30 |
| 2.3.2 Domänen-These .....   | 32 |
| 2.3.3 Modell-These .....  | 36 |
| 2.3.3.1 Vorstellungsschemata und Szenarios .....  | 37 |
| 2.3.3.2 Projizierungs-IKM's.....  | 40 |
| 2.3.3.3 IKM-Bildung .....   | 41 |
| 2.3.4 Diachronie-These.....   | 43 |
| 2.3.5 Unidirektionalitätsthese.....   | 43 |
| 2.3.6 Invarianz-These.....  | 45 |
| 2.3.7 Notwendigkeitsthese.....  | 46 |
| 2.3.8 Kreativitätsthese.....  | 47 |
| 2.3.9 Fokussierungsthese.....   | 48 |
| <b>3 Das Kirchenlied als Textsorte religiöser Sprache</b> .....   | 51 |
| 3.1 Religiöse Sprache – Begriffsbestimmung.....   | 51 |
| 3.1.1 Merkmale der religiösen Sprache .....   | 52 |
| 3.1.2 Rekontextualisierung der religiösen Sprache – religiöse<br>Sprache und kognitive Metapherntheorie ..... | 54 |
| 3.2 Das Kirchenlied – Begriffsbestimmung und<br>Textsortencharakteristik .....                                | 56 |
| 3.3 Empirische Möglichkeiten der kognitiven<br>Metapherntheorie für die Kirchenliedforschung.....             | 59 |

|          |   |           |
|----------|---|-----------|
| <b>4</b> | <b>Paul Gerhardt – Person und Kirchenlieddichtung .....</b>                     | <b>65</b> |
| 4.1      | Das deutsche Kirchenlied – historischer Hintergrund bis auf Paul Gerhardt ..... | 65        |
| 4.2      | Paul Gerhardts Lebensstationen .....  | 69        |
| 4.2.1    | Gräfenhainichen.....  | 69        |
| 4.2.2    | Grimma .....  | 70        |
| 4.2.3    | Wittenberg .....  | 71        |
| 4.2.4    | Berlin (I).....   | 72        |
| 4.2.5    | Mittenwald.....   | 74        |
| 4.2.6    | Berlin (II) .....   | 75        |
| 4.2.7    | Lübben.....   | 79        |
| 4.3      | Paul Gerhardts Werk .....   | 81        |
| 4.3.1    | Die wichtigsten Werkausgaben .....  | 82        |
| 4.3.2    | Johann Crügers „Praxis pietatis melica“ 1674 Frankfurt am Main .....            | 83        |

## **EMPIRISCHER TEIL**

|           |   |           |
|-----------|---|-----------|
| <b>5</b>  | <b>Onomasiologisch-kognitiver Metaphernansatz .....</b> | <b>89</b> |
| 5.1       | Onomasiologie versus Semasiologie .....                 | 89        |
| 5.2       | Korpuszusammenstellung.....                             | 90        |
| 5.3       | Methodologische Vorgehensweise.....                     | 91        |
| <b>6</b>  | <b>Korpusanalyse .....</b>                              | <b>95</b> |
| 6.1       | Konzeptualisierungen bildschematischer Art.....         | 95        |
| 6.1.1     | BEHÄLTER-Schema.....                                    | 95        |
| 6.1.1.1   | Empirische Darlegung.....                               | 96        |
| 6.1.1.1.1 | MENSCH IST EIN BEHÄLTER .....                           | 96        |
| 6.1.1.1.2 | JESUS IST EIN BEHÄLTER .....                            | 97        |
| 6.1.1.1.3 | DAS HERZ IST EIN BEHÄLTER .....                         | 98        |
| 6.1.1.1.4 | DIE SEELE IST EIN BEHÄLTER .....                        | 100       |
| 6.1.1.1.5 | DAS WORT GOTTES IST EIN BEHÄLTER .....                  | 100       |
| 6.1.1.1.6 | DER TOD IST EIN BEHÄLTER.....                           | 101       |
| 6.1.1.1.7 | DIE SÜNDE IST EIN BEHÄLTER .....                        | 101       |
| 6.1.1.1.8 | EMOTIONEN SIND EIN BEHÄLTER.....                        | 102       |
| 6.1.1.1.9 | DIE WELT IST EIN BEHÄLTER.....                          | 103       |
| 6.1.1.2   | Resümee .....   | 104       |
| 6.1.2     | WEG-Szenario.....                                       | 106       |
| 6.1.2.1   | Empirische Darlegung.....                               | 108       |
| 6.1.2.1.1 | DIE WEGE GOTTES.....                                    | 109       |

|           |   |     |
|-----------|---|-----|
| 6.1.2.1.2 | DIE WEGE DES BÖSEN .....                                  | 113 |
| 6.1.2.2   | Resümee .....   | 115 |
| 6.1.3     | SEEFahrTS-Szenario.....                                   | 117 |
| 6.1.3.1   | Empirische Darlegung.....                                 | 118 |
| 6.1.3.1.1 | DER MENSCH IST EIN SCHIFF.....                            | 118 |
| 6.1.3.1.2 | GOTT IST WASSER.....                                      | 119 |
| 6.1.3.1.3 | GOTT IST EIN ANKER.....                                   | 120 |
| 6.1.3.1.4 | DAS BÖSE IST EIN MEER .....                               | 121 |
| 6.1.3.1.5 | FISCHER-Konzeptualisierungen.....                         | 121 |
| 6.1.3.2   | Resümee .....   | 122 |
| 6.1.4     | KRIEGS-Szenario.....                                      | 124 |
| 6.1.4.1   | Empirische Darlegung.....                                 | 125 |
| 6.1.4.1.1 | DAS BÖSE HAT SEIN REICH.....                              | 126 |
| 6.1.4.1.2 | GOTT HAT SEIN REICH .....                                 | 127 |
| 6.1.4.1.3 | GOTT UND DAS BÖSE FÜHREN KRIEG.....                       | 133 |
| 6.1.4.1.4 | DER MENSCH UND DAS BÖSE FÜHREN KRIEG .....                | 135 |
| 6.1.4.1.5 | KRIEGSENDE: DER MENSCH - DAS BÖSE.....                    | 138 |
| 6.1.4.1.6 | DER MENSCH UND DIE WELT FÜHREN KRIEG .....                | 139 |
| 6.1.4.2   | Resümee .....   | 140 |
| 6.1.5     | VERTIKAL-ORIENTIERUNGS-Schema.....                        | 142 |
| 6.1.5.1   | Empirische Darlegung.....                                 | 144 |
| 6.1.5.1.1 | GOTT IST OBEN .....                                       | 144 |
| 6.1.5.1.2 | DER MENSCH IST UNTEN.....                                 | 146 |
| 6.1.5.1.3 | DAS BÖSE IST UNTEN / DER MENSCH SINKT NACH<br>UNTEN ..... | 147 |
| 6.1.5.2   | Resümee .....   | 149 |
| 6.1.6     | FARB-Schema.....  | 151 |
| 6.1.6.1   | Empirische Darlegung.....                                 | 152 |
| 6.1.6.1.1 | GOTTES-Konzeptualisierungen.....                          | 152 |
| 6.1.6.1.2 | BÖSE-Konzeptualisierung.....                              | 154 |
| 6.1.6.1.3 | TOD-Konzeptualisierungen.....                             | 156 |
| 6.1.6.1.4 | MENSCH-Konzeptualisierungen.....                          | 157 |
| 6.1.6.1.5 | BLUT-Konzeptualisierungen.....                            | 158 |
| 6.1.6.2   | Resümee .....   | 159 |
| 6.1.7     | PFLANZEN-Schema .....                                     | 160 |
| 6.1.7.1   | Empirische Darlegung.....                                 | 161 |
| 6.1.7.1.1 | JESUS IST EINE BLUME.....                                 | 161 |
| 6.1.7.1.2 | DER MENSCH IST EIN BAUM.....                              | 162 |
| 6.1.7.1.3 | DAS WORT IST EINE PFLANZE.....                            | 164 |
| 6.1.7.2   | Resümee .....   | 165 |

|           |  |     |
|-----------|--|-----|
| 6.1.8     | NAHRUNGS-Schema .....                              | 166 |
| 6.1.8.1   | Empirische Darlegung.....                          | 167 |
| 6.1.8.1.1 | DER MENSCH.....                                    | 167 |
| 6.1.8.1.2 | DAS WORT .....                                     | 168 |
| 6.1.8.1.3 | GOTT .....   | 169 |
| 6.1.8.1.4 | JESUS.....   | 169 |
| 6.1.8.1.5 | DAS BÖSE.....                                      | 170 |
| 6.1.8.1.6 | DAS LEBEN.....                                     | 171 |
| 6.1.8.2   | Resümee .....                                      | 171 |
| 6.1.9     | ZYKLUS-Schema.....                                 | 173 |
| 6.1.9.1   | Empirische Darlegung.....                          | 175 |
| 6.1.9.1.1 | TAG-NACHT-ZYKLUS.....                              | 175 |
| 6.1.9.1.2 | HEUTE-MORGEN-ZYKLUS .....                          | 176 |
| 6.1.9.1.3 | JUGEND-ALTER-ZYKLUS.....                           | 177 |
| 6.1.9.1.4 | GUTE-ZEIT-BÖSE-ZEIT-ZYKLUS.....                    | 178 |
| 6.1.9.1.5 | LEBEN-TOD-ZYKLUS.....                              | 178 |
| 6.1.9.1.6 | JAHRESZYKLUS .....                                 | 179 |
| 6.1.9.1.7 | KRIEG-FRIEDEN-ZYKLUS .....                         | 180 |
| 6.1.9.2   | Resümee .....                                      | 181 |
| 6.2       | Konzeptualisierungen nicht-schematischer Art ..... | 182 |
| 6.2.1     | GOTTES-Konzeptualisierungen.....                   | 182 |
| 6.2.1.1   | GOTT IST MENSCH.....                               | 182 |
| 6.2.1.2   | GOTT IST EIN FELS.....                             | 188 |
| 6.2.1.3   | Resümee .....                                      | 189 |
| 6.2.2     | JESUS-Konzeptualisierungen.....                    | 190 |
| 6.2.2.1   | JESUS IST EIN LIEBHABER.....                       | 190 |
| 6.2.2.2   | JESUS IST EIN FREUND .....                         | 191 |
| 6.2.2.3   | JESUS IST EIN HIRTE.....                           | 192 |
| 6.2.2.4   | JESUS IST EIN LAMM .....                           | 192 |
| 6.2.2.5   | JESUS IST EINE SONNE.....                          | 193 |
| 6.2.2.6   | JESUS IST EIN ARZT .....                           | 193 |
| 6.2.2.7   | JESUS IST EIN VOGEL.....                           | 193 |
| 6.2.2.8   | Resümee .....                                      | 194 |
| 6.2.3     | MENSCH-Konzeptualisierungen .....                  | 194 |
| 6.2.3.1   | MENSCH IST KIND .....                              | 195 |
| 6.2.3.2   | MENSCH IST ARM .....                               | 197 |
| 6.2.3.3   | MENSCH IST SCHAF .....                             | 197 |
| 6.2.3.4   | MENSCH IST KRANK.....                              | 198 |
| 6.2.3.5   | Resümee .....                                      | 198 |
| 6.2.4     | WELT-Konzeptualisierungen.....                     | 199 |

|            |  |            |
|------------|--|------------|
| 6.2.5      | BÖSE-Konzeptualisierungen.....   | 200        |
| 6.2.5.1    | DAS BÖSE IST EIN DRACHE .....  | 200        |
| 6.2.5.2    | DAS BÖSE IST EINE SCHLANGE.....  | 201        |
| 6.2.5.3    | DAS BÖSE IST EIN TAUSENDKÜNSTLER.....  | 201        |
| 6.2.6      | SEELEN-Konzeptualisierungen .....  | 202        |
| <b>7</b>   | <b>Schlussfolgerungen .....</b>  | <b>203</b> |
| 7.1        | Kulturell-historisch-biografischer Zusammenhang der<br>Konzeptualisierungen..... | 203        |
| 7.2        | Spezifische religiöse Konzeptualisierungen.....                                  | 205        |
| 7.3        | Revidierung der Hauptthesen der kognitiven Metaphertheorie.....                  | 207        |
| 7.3.1      | Ubiquitätsthese.....   | 207        |
| 7.3.2      | Domänen-These .....  | 209        |
| 7.3.3      | Modell-These .....   | 212        |
| 7.3.4      | Diachronie-These.....  | 213        |
| 7.3.5      | Unidirektionalitätsthese .....   | 214        |
| 7.3.6      | Invarianz-These.....   | 215        |
| 7.3.7      | Notwendigkeitsthese.....   | 217        |
| 7.3.8      | Kreativitätsthese .....  | 217        |
| 7.3.9      | Fokussierungsthese .....   | 218        |
|            | <b>BIBLIOGRAPHIE .....</b>   | <b>219</b> |
| <b>I</b>   | <b>Abbildungsverzeichnis .....</b>   | <b>229</b> |
| <b>II</b>  | <b>Tabellenverzeichnis .....</b>   | <b>231</b> |
| <b>III</b> | <b>Verzeichnis der analysierten Kirchenlieder .....</b>                          | <b>233</b> |